पंचम पत्र
धर्म दर्शन

Philosophy
B.A III (Hons)

ईश्वर के गुण और व्यक्तित्व

धर्म दर्शन में व्यक्तित्व और ईश्वर के सम्बन्ध को लेकर आलोचनात्मक वाद विवाद होते आये हैं क्या ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है? सामान्यतः व्यक्तित्व का अर्थ किसी व्यक्ति विशेष के संदर्भ में ही लेते हैं लेकिन मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण व्यक्तित्व की और सामान्य विचार से भिन्न है परन्तु धर्म दर्शन में जब हम कहते हैं कि ईश्वर एक व्यक्तित्व पूर्ण सत्ता है तो इसका दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक नहीं होता बल्कि उससे भिन्न होता है अथवा प्रकृति के विकास में सबसे उत्तम तत्व सत्ता है परन्तु प्रकृति का तथा विकास निरूपण होने के बाद भी उससे ऊपर एक ऐसी सत्ता है जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर के व्यक्तित्व का क्या अर्थ है ईश्वर आत्म चेतन सत्ता है आत्म-चेतना का स्वरूप व्यक्तित्व का सूचक है ईश्वर आत्मचेतन है इसलिए वह व्यक्तित्व पूर्ण है मैकटैगार्ट ने भी व्यक्तित्व और आत्म चेतना को आवश्यक रूप से सम्बन्धित बतलाया है-उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि व्यक्तित्व की व्याख्या में जब हम ईश्वर को व्यक्तित्व पूर्ण मानते हैं तब हमारा मतलब है कि वह आत्म-चेतन है तथा उसे अपने व्यक्तित्व का उसी प्रकार बोध है जिस प्रकार हमें अपने अस्तित्व का बोध है।

आत्म चेतना के अतिरिक्त ईश्वर में

संकल्प स्वातंत्र्य का रहना अनिवार्य है। ईश्वर अपनी इच्छानुसार काम करता है वह स्वतंत्रता पूर्वक निर्माण कर सकता है

इस विशेष गुण के कारण ईश्वर ने संसार के समस्त विषयों निर्मित किया है ईश्वर एक स्रष्टा है उसी ने विश्व की सृष्टि की है मानव सृष्टि का महत्व पूर्ण भी है ईश्वर ने ही विश्व के शुभ, अशुभ विषयों का निर्माण किया है इसलिए

मानवीय व्यक्तित्व में आत्मचेतना तथा आत्म नियंत्रण रहना आवश्यक है जिस प्रकार ईश्वर के व्यक्तित्व में आत्म चेतना का होना अनिवार्य है परन्तु मानव को विश्व का स्रष्टा नहीं कहा जा सकता। वह तो स्वतः ईश्वरीय सृष्टि है ईश्वर शाश्वत है उसका न आदि है और न अन्त। ईश्वर की उत्पत्ति किसी विशेष समय में नहीं होती इस प्रकार ईश्वर अनन्त है

ईश्वर एक पूर्ण जीव है उसमें किसी प्रकार का अभाव नहीं है वह हरेक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है धार्मिक उपासक ईश्वर की आराधना करता है तथा ईश्वर पर निर्भरता की भावना रखता है और अपनी प्रार्थना को स्वीकार करने में विश्वास रखता है

प्रत्येक व्यक्ति में कमियां पायी जाती है व्यक्ति निरन्तर नैतिक दृष्टि से उन्नति करता है इसके लिए एक व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर में विश्वास होना आवश्यक है इस लिए ईश्वर को व्यक्तित्व पूर्ण मानना अनिवार्य है